IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्वामी विवेकानन्द की शैक्षिक विचारधाराऐं एवं एनईपी 2020 की पुनः पुष्टि

डॉ० हरेन्द्र कुमार शर्मा

एसोसिएट प्रोफेसर, महाराजा सूरजमल टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, भरतपुर (राज०)

सारांश

यह पेपर शिक्षा पर स्वामी विवेकानन्द की विचारधारा और दर्शन पर केंद्रित है। स्वामी विवेकानन्द आधुनिक भारत के महान दूरदर्शी एवं समाज सुधारक थे। उन्होंने शिक्षा को मानव पूर्ति और अवतार की प्रक्रिया के रूप में देखा क्योंकि उन्होंने विश्लेषण किया कि जीवन में प्रत्येक व्यक्ति का मिशन अच्छी शिक्षा और अच्छा जीवन प्राप्त करना है। जब मनुष्य को अच्छी शिक्षा मिलेगी तभी वह अपने जीवन के लक्ष्य, लक्ष्य, भूमिका और जिम्मेदारियों को समझ पाएगा, वह खुद को एक पूर्ण व्यक्ति के रूप में साबित कर पाएगा। अच्छी शिक्षा उसे विवेक, गहन अवलोकन, सदाचारी जीवन और करुणा के गुणों का समर्थन करेगी। नई शिक्षा नीति 2020 (एनईपी 2020) भी भारतीय शिक्षा क्षेत्र को मुख्य शिक्षण और कौशल गहनता रणनीतियों के साथ मजबूत करने की पेशकश करती है, लेकिन यह पूरी तरह से चुनौतीपूर्ण है। देश भर के शिक्षाविदों को नई शिक्षा नीति (एनईपी 2020) के कार्यान्वयन के आलोक में स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक दर्शन को फिर से पुष्ट करने की आवश्यकता है।

मुख्य शब्दावलीः– स्वामी विवेकानन्द, शिक्षा दर्शन, एनईपी 2020।

प्रस्तावनाः–

नई शिक्षा नीति 2020 (एनईपी 2020) भारतीय शिक्षा के प्रतिमानों को वैश्विक मानकों तक बढ़ाने की पेशकश करती है। लेकिन भारतीय शैक्षिक मानक वैश्विक परिशुद्धता के साथ तभी मेल खाएंगे जब शैक्षिक उत्पादन भारत की व्यावहारिक मान्यताओं और तर्कसंगत दर्शन की रक्षा करने में सक्षम होगा। प्राचीन काल से ही भारत महानतम शैक्षणिक उपलब्धियों की भूमि रहा है। दुनिया भर से छात्र वाराणसी, नालंदा, राजगृह, विक्रमशिला, वैशाली, उज्जयिनी, तक्षशिला आदि जैसे भारतीय विश्वविद्यालयों में पढ़ने आते थे।

शिक्षा पर स्वामी विवेकानन्द के विचारः– शिक्षा पर स्वामी विवेकानन्द के विचार निम्न हैंः–

1. शिक्षा के उद्देश्य
2. शिक्षण के तरीके
3. शिक्षा के घटक
4. सीखने के परिणाम
5. नैतिक शिक्षा की आवश्यकता
6. मातृभाषा में सीखने की आवश्यकता
7. एक शिक्षक की पूर्व आवश्यकताएँ

स्वामी विवेकानन्द वेदांत दर्शन और सनातन धर्म में दृढ़ विश्वास रखते थे और उन्होंने हिंदू धर्म के दर्शन का प्रसार किया। उन्होंने शिक्षा के माध्यम से सभी सामाजिक आर्थिक और धार्मिक बुराइयों का समाधान खोजा क्योंकि उनका मानना था कि केवल शिक्षा ही लोगों को सही रास्ते पर ले जाएगी। स्वामी विवेकानन्द सही गुणों को स्थापित करने का प्रयास करते हैं जो केवल अच्छी शिक्षा ही प्रदान कर सकती है। वे वेदांत के अपने समग्र दर्शन के आलोक में इस "मनुष्य निर्माण" शिक्षा की योजना तैयार करते हैं। वेदांत के अनुसार मनुष्य का सार उसकी आत्मा में निहित है जो उसके शरीर और भौतिक उपस्थिति के अलावा उसके पास है।

पूर्णता की अभिव्यक्ति के रूप में शिक्षा

स्वामी विवेकानन्द शिक्षा को मनुष्य में पहले से मौजूद पूर्णता की अभिव्यक्ति के रूप में वर्णित करते हैं। स्वामी विवेकानन्द कहते हैं कि शिक्षा का उद्देश्य मानव जीवन को पूर्णता में प्रकट करना है। पूर्णता उस अनंत शक्ति का अहसास है जो हर चीज और हर चीज में निवास करती है। इस पूर्णता के मूल स्वरूप को समझने के बाद व्यक्ति को स्वयं की पहचान करने का प्रयास करना चाहिए। इसके लिए अहंकार, अज्ञानता और गलत व्यक्तिगत व्यवहार का पूर्ण उन्मूलन आवश्यक है। स्वामी विवेकानन्द कहते हैं कि मनुष्य को यह ज्ञात हो जाता है कि उसकी आत्मा ब्रह्माण्ड की अन्य सभी आत्माओं के समान है। स्वामी विवेकानन्द कहते हैं कि शिक्षा व्यक्ति को स्वयं के भीतर को समझने में सक्षम बनाती है, क्योंकि स्वयं सर्वव्यापी है। स्वामी विवेकानन्द कहते हैं कि ब्रह्माण्ड की आवश्यक एकता को शिक्षा के माध्यम से महसूस किया जाता है, तदनुसार "मनुष्य निर्माण" का अर्थ मनुष्य में उसके सच्चे स्व के बारे में जागरूकता जगाना है। अतः दृढ़ इच्छाशक्ति वाला व्यक्ति बनने के लिए शिक्षा आवश्यक है। शिक्षा व्यक्ति को गुणों पर ध्यान देने, बुराइयों का पता लगाने, कमियों का निरीक्षण करने में सक्षम बनाती है। साथ ही यह कौशल प्रदान करता है जो उसे निगरानी, जांच, जांच और विश्लेषण करने में सहायता करता है।

शिक्षा द्वारा मन पर नियंत्रण

स्वामी विवेकानन्द कहते हैं कि विद्यार्थियों की मनःस्थिति प्रायः व्यावहारिक और नियंत्रण से बाहर होती है। इसलिए, शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो उनकी विचार प्रक्रिया पर पूर्ण नियंत्रण रखे। इसके जरिए हासिल किया जा सकता है।

इस प्रकार स्वामी विवेकानन्द इस बात पर जोर देते हैं कि छात्रों के मन और इच्छा शक्ति का उपयोग ध्यान और एकाग्रता के माध्यम से नैतिक मूल्यों के प्रति किया जाना चाहिए। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार वैदिक विचारधारा द्वारा

प्रमाणित ब्रह्मचर्य का अभ्यास छात्रों में अच्छा आत्म–नियंत्रण लाता है। वे शिक्षा में सफलता प्राप्त कर सकते हैं और शराब, नशीली दवाओं, शराब, गलत खान–पान जैसी बुराइयों से भी दूर रह सकते हैं।

स्वामी विवेकानन्द और शिक्षा प्रदान करने पर उनके विचार–

शिक्षा प्रदान करने पर स्वामी विवेकानन्द के विचार वेदांतिक आधार का विस्तार थे।

स्वामी विवेकानन्द और शिक्षक की भूमिका पर विचार–

स्वामी विवेकानन्द कहते हैं कि ज्ञान प्रत्येक मनुष्य में निहित है। शिक्षक का कार्य केवल छात्रों को अच्छी शिक्षा प्राप्त करने के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करने में सहायता करना है। एक शिक्षक न केवल एक उपदेशक होता है बल्कि उच्च नैतिक मानकों का अग्रदूत भी होता है।

स्वामी विवेकानन्द और शिक्षक की प्रेरणा पर विचार–

स्वामी विवेकानन्द ने हमेशा ऐसे पौधे का उदाहरण दिया जो प्राकृतिक रूप से उगता है और लोग इसकी सेवा केवल पानी और मिट्टी से करते हैं, जबकि यह अपने अंतर्निहित गुणों के सहारे प्राकृतिक रूप से बढ़ता है। इसी तरह, उन्होंने शिक्षकों से छात्रों को प्राकृतिक तरीकों से जीवन का सार खोजने में सहयोग देने की वकालत की। उन्होंने हर उस दृष्टिकोण पर आपत्ति जताई जो सीखने को सिंथेटिक और पुरातनपंथी बनाता है।

स्वामी विवेकानन्द और शिक्षा के माध्यम पर विचार–

स्वामी विवेकानन्द का मत था कि सामूहिक शिक्षा के लिए मातृभाषा ही सही माध्यम है। हालाँकि उन्होंने संस्कृत और अंग्रेजी भाषाएँ सीखने का सुझाव दिया, लेकिन उन्होंने मातृभाषा सीखने का समर्थन किया, इससे बच्चों को अवधारणाओं को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलेगी।

स्वामी विवेकानन्द और शिक्षा के माध्यम पर उनके विचार–

स्वामी विवेकानन्द का विचार था कि यदि युवा पीढ़ी अपने द्वारा सीखे गए विषयों की धारणा को वैचारिक रूप से और पूरी तरह से समझती है, तो एक राष्ट्र का विकास सुचारू और समान होगा। केवल मातृभाषा के माध्यम से झुकाव ही अच्छे बुरे और बदसूरत को समझने में मदद करता है और अच्छे चरित्र को प्राप्त करने में मदद करेगा। यह गहन अवलोकन छात्रों को किसी राष्ट्र की संस्कृति, परंपराओं, प्रथाओं, सम्मेलनों को समझने में सहायता करेगा। यह संज्ञान संवेदनशीलता, बारीकी से जांच और चीजों का विश्लेषण भी पैदा करता है। इस प्रकार एक व्यक्ति को मन और शरीर से मजबूत बनने के लिए तैयार किया जाता है और जब बच्चे की इच्छा शक्ति मजबूत होती है, स्वास्थ्य उच्च उत्साही होता है, विचार परंपराओं द्वारा समर्थित होते हैं, और तब वह जीवन में 100 प्रतिशत सफलता प्राप्त करेगा। एक कमजोर इरादों वाला, कमजोर व्यक्ति जीवन में कुछ भी हासिल नहीं कर सकता है, ऐसे व्यक्ति समुदाय के लिए बोझ होते हैं और समाज ऐसे कमजोर इरादों वाले व्यक्तियों के तहत समान प्रगति निर्धारित नहीं कर सकता है। इसलिए, शिक्षा को बच्चे को सामाजिक मुद्दों के प्रति अधिक से अधिक प्रतिक्रियाशील बनने में सहायता करने की आवश्यकता है।

स्वामी विवेकानन्द और शिक्षा की योजना पर विचार–

स्वामी विवेकानन्द सभी विषयों के अध्ययन पर जोर देते हैं क्योंकि एक बच्चे के सर्वांगीण विकास के लिए विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कला, संस्कृति, इतिहास, पर्यावरण और धर्म की सही समझ की आवश्यकता होती है। वे सभी विषय जो बच्चे को पहचानने और समझने में सहायता करते हैं।

स्वामी विवेकानन्द और अध्ययन के विषयों पर विचार–

स्वामी विवेकानन्द ने विविध विषयों के अध्ययन पर बल दिया। विषयों को व्यापक शीर्षक के अंतर्गत विभाजित किया जो निम्न हैं–

1. भौतिक संस्कृति
2. सौंदर्यशास्त्र
3. शास्त्रीय
4. भाषा
5. धर्म
6. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार, इन सभी विषयों के अध्ययन से किसी क्षेत्र को विकास की ओर ऐतिहासिक रूप से आगे बढ़ाने में मदद मिलेगी। भारत के प्रत्येक नागरिक को विभिन्न विषयों के अध्ययन के माध्यम से सांस्कृतिक विकास की अंतर्निहित धाराओं को जानने की आवश्यकता है। स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों और दर्शन के ज्ञान पर पूरा ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है क्योंकि इसमें वह सब कुछ समाहित है जो मनुष्य में पूर्णता की अभिव्यक्ति की ओर ले जाता है।

स्वामी विवेकानन्द और वेदांत दर्शन पर विचार–

स्वामी विवेकानन्द वेदांत दर्शन और सनातन धर्म में दृढ़ विश्वास रखते थे और उन्होंने हिंदू धर्म के दर्शन का प्रसार किया। उन्होंने शिक्षा के माध्यम से सभी सामाजिक आर्थिक और धार्मिक बुराइयों का समाधान खोजा क्योंकि उनका मानना था कि केवल शिक्षा ही लोगों को सही रास्ते पर ले जाएगी।

स्वामी विवेकानन्द और शारीरिक शिक्षा पर विचार–

स्वामी विवेकानन्द अक्सर उपनिषदों को उद्धृत करते हुए कहते थे, ''नै आत्मा बलहीन लभ्यः। इसका स्पष्ट अर्थ है कि शारीरिक रूप से कमजोर व्यक्ति द्वारा स्वयं का एहसास नहीं किया जा सकता है। स्वामी विवेकानन्द शारीरिक स्वास्थ्य प्राप्त करने पर भी जोर देते हैं क्योंकि उनका हमेशा मानना था कि एक मजबूत और स्वस्थ शरीर हमेशा राष्ट्रीय लक्ष्यों तक पहुंचने के लिए प्रेरित करेगा। कोई भी व्यक्ति देश के हित के लिए तभी लड़ सकता है जब वह मजबूत, शारीरिक रूप से स्वस्थ और सशक्त हो। स्वास्थ्य और फिटनेस के बिना व्यक्ति राष्ट्र के लिए बोझ बन जाएगा। इसलिए, उन्होंने सभी के लिए शारीरिक शिक्षा पर जोर दिया।

निष्कर्ष

इस प्रकार, स्वामी विवेकानन्द का मानना था कि केवल अच्छी शिक्षा ही व्यक्ति को स्वयं को समझने में सक्षम बनाती है। स्वामी विवेकानन्द ने राष्ट्रीय विकास के एक भाग के रूप में अच्छी शिक्षा प्रदान करने पर जोर दिया। उन्होंने शिक्षा में नैतिक मानकों का सचेत रूप से प्रचार किया जो नई शैक्षिक नीति 2020 में भी प्रकट हुआ है। स्वामी विवेकानन्द शिक्षा के माध्यम से पूर्णता प्राप्त करने पर जोर देते हैं क्योंकि उनका मानना था कि शिक्षा एक सच्चे व्यक्ति की अभिव्यक्ति है। भारतीय शैक्षिक नीति निर्माताओं को महान गुरु की विचारधाराओं की पुष्टि करने और उन्हें प्राप्त करने की दिशा में काम करने की आवश्यकता है।

संदर्भ

(1) बनहट्टी जी.एस., लाइफ एंड फिलॉसफी ऑफ स्वामी विवेकानन्द, अटलांटिक पब्लिशर्स, 2010

(2) भारती एस.वी.,– द एजुकेशनल फिलॉसफी ऑफ स्वामी विवेकानन्द, डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस, 2001 (3) गौतम घोष. ,– ए बायोग्राफी ऑफ स्वामी विवेकानन्द, रूपा एंड कंपनी प्रकाशन, 2012

(4) रंजीत शर्मा, आदर्शवादी दर्शन स्वामी विवेकानन्द, पुस्तक प्रकाशन, 2000

(5) सतीश के कपूर, सांस्कृतिक संपर्क और संलयन स्वामी विवेकानन्द इन द वेस्ट, एबीएस प्रकाशन, 2015

(6) स्टीफन अब्राहम, स्वामी विवेकानन्द के सामाजिक दर्शन का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, ओटेगो विश्वविद्यालय, 2013